बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'मैं गायक हूँ स्वच्छंद हिमांचल का' शीर्षक कविता का भावार्थ

'गोपाल सिंह नेपाली' की कविताएँ उनकी राष्ट्रीय चेतना को ध्वनित तो करती ही है, भारतीयता को भी स्वर देती है। कई बार उनकी कविता और व्यक्तित्व का फर्क ही मिट जाता है। विवेच्य कविता इसका उदाहरण है। यहाँ कवि भारतवासियों को केन्द्र में रखकर कविता रचता है। वस्तुतः वह स्वयं एक भारतीय के रूप में उपस्थित है और भारतीय संस्कृति तथा प्रकृति का स्वच्छंद गायक बना हुआ है। उसकी स्पष्ट घोषणा है कि–''मैं गायक हूँ स्वच्छंद हिमाचल का''। विवेच्य कविता कवि की इसी घोषणा का मुखर स्वर है। एक भारतीय के रूप में कवि भारत के कण–कण से वाकिफ है। उसे अपने देश की मिट्टी और प्रकृति से बेहद प्यार है। उसकी नजर भारत की सुन्दरतम प्रकृति पर पड़ती है। वह पर्वतों में हिमालय को देखता है, नदियों में गंगा को और ऋतुओं में वसंत और पावस को। कवि स्वयं को पार्थक कहता है जिसकी प्यास गंगा–जल से ही बुझ सकती है। वह साक्षात प्रहरी है। भारतवासियों की रक्षा का दायित्व उसी पर है। सागर की लहरें, वन की गलियाँ, ग्राम–शहर–सभी मिलकर भारत की आत्मा का निर्माण करते हैं, इस देश का प्रत्येक व्यक्ति इसी की मिट्टी का पुतला है। कवि भी उनमें से एक है।

कवि कहता है कि भारतीयता प्रेम के बन्धन से परिभाषित होती है, जिसका आदर्श यमुना के किनारे कृष्ण ने प्रस्तुत किया था। उस प्रेम की छवि प्रत्येक भारतीय की आँखों में आज भी विद्यमान है। वहीं आदर्श प्रेम अपनी सघनतम स्थिति में आँखों में आज भी विद्यमान है। वही आदर्श प्रेम अपनी सघनतम स्थिति में आँखों से छलक पड़ता है। जीवन का स्त्रोत प्रेम ही है जो मानवता में परिणत हो जाता है।

कवि कहता है कि भारत ज्ञान का आराधक रहा है, दुनिया इसे गुरू मानती रही है और इसकी बातों को सुनती रही है। कवि उसी देश की स्वच्छंद प्रकृति का गायक है। इस देश के पूर्व में बंगला देश है, जहाँ से सूर्य उदित होकर विश्व को आलोकित करता है। सूर्योदय प्रत्येक भारतवासी के लिए नवजीवन की ऊर्जा है। इसी प्रकार सूर्यास्त की अरूर्णिम आभा करूणा लिए उपस्थित होती है, जो प्रत्येक घर में सूर्य की रोशनी के अभाव को दीप जलाकर पूरा करती है।

भारत के उत्तरी क्षेत्र में हिमालय की पर्वतमालाएँ हैं, जो हिम से आच्छादित रहती हैं। इन पर्वतमालाओं से चलनेवाली हवाएँ समस्त प्रदेश को शीतलता से भर देती हैं। दक्षिण में समुद्री लहरें

उठती हैं, जिससे प्रभावित होकर हवाएँ चंचल हो जाती है और झोंको का बौछार कर देती है। इतना ही नहीं विन्ध्याचंल से उठनेवाला सुगंधित मलय–पवन जानपद की चरणों में खुशबू बिखेरता है।

कवि आगे कहता है कि कला की जीवन्तता भारतीयों से है, जब विश्व कला निष्प्राण हो चुकी थी तो उसमें फूँकने का काम भारतीयों ने किया। इनको गर्व है कि वह छोरहीन सागर के किनारे रहता है। जब वह सागर में नावें दौड़ाता है, तो सागर की लहरें उमड़ पड़ती है, वे उनका आलिंगन कर तृप्त हो जाता है। वह जब चंचल सागर के किनारे पर खड़ा होता है तो लहरे उसका चरण स्पर्श करती हैं। कवि को सागर की प्रत्येक अदा से प्यार है। उनकी दृष्टि में भारतवासी भोले, शांत और आनंदित रहनेवाले है। उनकी स्वातंन्त्र्य चेतना अत्यंत प्रबल है। स्वतंत्रता उनके लिए तीर्थ के समान है, जिसकी रक्षा के संघर्ष करना उनके खून में है। उनके इस प्रवृत्ति का उदाहरण हल्दी–घाटी है, जहाँ कई–कई रातें आँखों में ही कटती थीं। उसी संघर्षपूर्ण कौशल का सुपरिणाम है कि भारत हलचल–भरी दुनिया का दामन थामें आगे की ओर बढ़ा जा रहा है और अपनी कमजोरियों से मुक्त होता जा रहा है। इस देश की संस्कृति का मूल विश्वास और अनुराग के अन्तर्सम्बन्ध में निहित है। यहाँ प्रतिदान हेय समझा जाता है। आत्मदान का विशेष महत्व है। रण में मौत भी उल्लास का विषय है। इस प्रकार, हिन्दुस्तानी आवाम का बलिदान ऐतिहासिक होता है। साथ ही वे कहते है कि मैं (भारतवासी) फूलों के पीछे भागनेवाला भौरां नहीं हूँ। मेरी प्रवृत्ति संघर्ष की है। चाहे युद्ध का मैदान हो, चाहे आनंद की बात हो, चाहे बरसात का मौसम हो; मैं तो अपना पुस्तक हाथ में लिए काले बादल (चुनौती या प्रतिकूल परिस्थिति) का चाहक हूँ। वास्तव में भारतवासी जीवन का सुख संघर्ष में खोजते हैं। वे आनन्द का स्रोत परिश्रम के द्वारा चाहते हैं। अपने प्राप्य की कीमत देना भारतीयों की आदत है। वे शोषण के रास्ते पर चलकर कलियों का रस नहीं चूसते। उनका हर सुख परिश्रम और संघर्ष पर आधारित होता है। भारतीयों का जीवन साध्य नहीं है, वह साधन है मानवता की आराधना का । वस्तुतः भारत सदियों से विश्व वन को जीवन–ज्योति से आलोकित करता रहा है। इस आलोक में आशाओं के फूल–खिले।

राष्ट्रीय आंदोलन की तेजी उच्चशयता के समय लिखी गई यह कविता भारतवासियों की स्वातंन्त्र्य–चेतना की एक विशिष्ट प्रकृति का उद्‌घाटन करती है। गाँधी जी के नेतृत्व में चलाए जा रहे आंदोलन की सबसे बड़ी खासियत थी अहिंसा। इस नीति पर चलते हुए आजादी प्राप्त करने का मतलब था सम्पूर्ण मानवता की जीत। जाहिर है ऐसे आंदोलन में मानवता की उच्चशयता अनिवार्य होगी। कविवर नेपाली आंदोलनरत भारतीयों की इसी विशेषता को रेखांकित कर रहे है। केवल संघर्ष, बलिदान के रास्ते मनुष्यता की रक्षा करते हुए भारतीय अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं, वह आंदोलन का अत्यंत उदात्त रूप है। यह एक ऐसा रास्ता है जिसमें भारतीय प्रकृति, भारतीय जनता और भारतीय संस्कृति एक होकर सामने आते हैं। यह एकता स्वतंत्रता की स्पष्ट घोषणा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गोपाल सिंह नेपाली अपने देश की प्रकृति और उससे पोषण पानेवाले भारतीयों से अथाह प्रेम करते है।